

1-5 मेरे राम का मुकुट भीग रहा है,

लेखक पिछली पीढ़ी के व्यक्ति हैं, लेखक के चिरंजीव और उनकी राम मेहमान लड़की राम संगीत कार्यक्रम में रात के नौ बजे घर से बाग़ थे, वे रात के बारह बजे तक भी नहीं लौटे, इस बीच जोर की बारिश भी हो आ गई, आजकाल की असुरक्षित स्थिति का ध्यान करते लेखक के मन में "मेरे राम का मुकुट भीग रहा है" - यह पंक्ति कौंधली है और उन्हें दुश्चिन्ता होती है कि उन दोनों पर जाने क्या बीत रही होगी, वे जाने किस स्थिति में होंगे।

राम के मुकुट को लेकर लेखक के मन में तरह-तरह के खयाल उभरा, कौशल्य को राम बनवास जाने का कष्ट सहना पड़ा था। अयोध्या में राम राज्याभिषेक के मंगलमय प्रभाव की कल्पना की गई थी, अयोध्या में खुशियाँ मनाई जानेवाली थी, पर रोन वक्त पर स्थिति रत्नदम बढ़त गई और राम को निर्वसिन होना पड़ा। उनके विद्योबा में अयोध्या को शोक में डूब जाना पड़ा।

लेखक के मन में कई दिनों से यह पंक्तियाँ घूमने लगी हैं। लेखक बचपन में दादी-नानी के झूठ से यही गीत जाते पर वाते हुए सुनते थे और जब बड़े होकर विदेश से वापस आते, तो वे यही गीत गाती। तब उन्हें उनकी आकुलता पर हँसी आती थी और उनका रुई नहीं छूटा था।



लेखक को बीत की पंक्तियों के दर्द का अनुसास रात को उस समय हो रहा था, जब उस समय तक उनके चिरंजीव और उनकी मेहमान सन्धा घर लौटकर नहीं आया थे, खून में अनेक विचार आते हैं।

लेखक राम के निर्वसन, मौशल्या के अंतःकरण के दर्द, लाखों-करोड़ों मौशल्याओं और उनके रामों के वन में निर्वसन के बारे में तर्क-वितर्क करते हैं, इस तरह सोचते-सोचते सुबह के चार बजने को आ जाते हैं, तभी दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक होती है, दोनों घर आ जाने के बाद लेखक उनसे सिर्फ इतना ही कहा कि तुम्हें लोगों को इसका क्या अंदाजा होगा कि हम कितने परेशान रहे। बच्चों ने भोजन - दूध कुछ नहीं चुआ और मुँह बनाकर सोने का कहाना शुरू हुआ।

लेखक रात की सांस लेते हैं और विस्तर पर पड़ जाते हैं। वे अधिचिंतन अवस्था में विचारों में फिर वही पहुँच जाते हैं, जहाँ पहले खोया हुआ था।